ओम शान्ति 10-02-2020 मधुबन

दादी जानकी जी के दिल के उदगार

(अहमदाबाद स्टरलिंग हास्पिटल से)

ओम शान्ति से मीठे बाबा ने क्या से क्या बना दिया है, वैसे मैं तीन बारी ओम शान्ति कहती हूँ। बाबा, आपने अपने गले का हार बना दिया। परसो रात को ऐसे लग रहा था बाबा मुझे खींच रहा है, मैंने कहा बाबा भले मैं आ सकती हूँ।

जिन्होंने भी यादप्यार भेजा है सभी का खुशी से स्वीकार किया, जिन्होंने थोड़ा भी याद किया सभी को हमारी स्नेह भरी याद देना। कल रात को तबियत ठीक नहीं थी, आज यहाँ बैठी हूँ कोई हर्जा नहीं है, बाबा बैठा है। मैं कौन मेरा कौन, मेरा तो वण्डरफुल बाबा है, और वण्डरफुल बाबा के हम बच्चे हैं।

जैसे बाबा ने मुझे दृष्टि से प्यार दिया है, नेचरल मुस्काराना सिखा दिया है, ऐसे सबका चेहरा मुस्कराता रहे। हमारा चेहरा देख और भी सब मुस्कराने लगे। कोई कहते हैं आप पेशेन्ट हो, लेकिन पेशन्ट में पेशेन्स देख लोग खुश हो जाते हैं। मैंने सोचा था हम कल यहाँ से चले जायेंगे, लेकिन डाक्टर ने कहा अभी दो दिन और रहना है। जयन्ती बहन भी आई है ना! तो यहाँ गुप्त-गहरी लेनदेन करेंगे। कौन सी बातें, सर्विस की और स्वउन्नति की। जैसे बाबा ने हम बच्चों को अपना बनाके मुस्कराना सिखाया है वही दृश्य देखेंगे, थैंक्यू।

जयन्ती बहन - दादी को देखकर ये प्रेरणा आती है कि दादी का शरीर कैसा भी हो, पर दादी का ज्ञान मंथन सदा चलता रहता है। दादी के मुख से बाबा की अच्छी-अच्छी बातें निकलती रहती हैं। दादी की स्थिति इन सब बातों से पार उपराम। दादी कहती है ड्रामा वण्डरफुल है, मैं भी सोचती हूँ वण्डरफुल बाबा ने वण्डरफुल दादी भी बनाई है। हम दादियों से कई प्रेरणायें लेते हैं ये दादी भी हमारे सामने प्रेरणा दे रही हैं।